शेख़ फ़रीद – सबद ११२
फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥
सलोक, गुरु अर्जन, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८३

फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥
सोई जीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ॥११०॥

सार: समभावी कंपन, अस्थिर मन के लिए सटीक रूपक का काम करता है जो अपने आस-पास के माहौल पर प्रतिक्रिया देता है। बाहरी घटनाएँ हमारे अंतर्मन में गूँजती हैं, हमारे विचारों को प्रभावित करती हैं और हमारी समझ को धुंधला कर देती हैं। यह अशांति हमें अपनी स्थिरता बनाए रखने से रोकती है। जब हम जीवन की राह पर आसानी से विचलित हुए बिना आगे बढ़ पाते हैं तब हम बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया देने के बजाय, विचारपूर्वक जवाब दे पाते हैं।

फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥
फ़रीद कहते हैं कि यह दुनिया इंद्रियों की उत्तेजनाओं से गूंजती रहती है और तुम भी इस शोर के साथ ही स्पंदित होते हो। यह ऐसे मन का प्रतीक है जो स्थिर नहीं है जो अपने आस-पास के माहौल पर यंत्रवत प्रतिक्रिया करता है और इस प्रक्रिया में वह सत्य पर अपनी पकड़ खो देता है।

सोई जीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ॥११०॥
केवल वही प्राणी अप्रभावित रहता है जिसे उस परम-वास्तविकता की जागरूकता का संरक्षण प्राप्त होता है। यह एक ऐसी सचेत उपस्थिति के महत्व को उजागर करता है जो हर परिस्थिति में स्थिर और अपने मूल से जुड़ी रहती है। (११०)

तत्त्व: गुरु अर्जन, शेख़ फ़रीद के इस तथ्य पर जोर देते हैं कि केवल वही लोग जीवन की बदलती परिस्थितियों से अप्रभावित रह सकते हैं जो सार्वभौमिक सत्य को समझते हैं। उनकी स्थिरता उन्हें दुनिया की नश्वरता से निराश होने से बचाती है जिससे वह शांति और सजगता बनाए रख पाते हैं।

सच्ची शक्ति आंतरिक स्पष्टता से आती है जो व्यक्तियों को अपना संतुलन खोए बिना, गरिमापूर्ण ढंग से जीवन की राह पर आगे बढ़ने में सक्षम बनाती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com